" उपसंहार "

ऐतिहासिक नाटक :

नाटक साहित्य सबसे विकसित साहित्यिक विधा है। मानव जीवन का प्रतिबिंब नाटक में है। हिन्दी नाटक का प्रारंभ भारतेन्दु के पहले ही हो चुका था। (१८५३) आद्य मराठी नाटककार विष्णुदास भावे को हिन्दी का पहला नाटककार कहा जा सकता है। हिन्दी नाटक के विकास में इतिहास की प्रेरणा महत्त्वपूर्ण है। इतिहास की पृष्ठभूमिपर लिखे ऐतिहासिक नाटक समाज को प्रेरणादायी ठहरे हैं। भारतेन्दु का " नीलदेवी " हिन्दी का पहला ऐतिहासिक नाटक है।

भारतेन्दु कालमें लिखे नाटक या तो बंगाली के अनुवाद थे , यॉ द्विजेंद्रलाल राय के प्रभाव को लकर लिखे थे। भले ही यह नाटक नाट्य कला की दृष्ठि से सफल न हो , तो भी समाज को उचित दिशा निर्देश करने में सफल हैं।

ऐतिहासिक नाटक का विकास जयशंकर प्रसाद के काल में हुआ। इतिहास की घटनाओ के माध्यम से आधुनिक युग की समस्यापर प्रकाश डालने का कार्य इस काल के ऐतिहासिक नाटकों में हुआ है।

प्रसादोत्तर कालमें ऐतिहासिक नाटक का पूर्ण विकास हुआ। इस काल के नाटक एक ओर समाज को इतिहास की याद दिलाते हैं , तो दूसरी ओर समाज को सहीं दिशा मे ले जाते हैं। समसामयिक समस्यापर विचार इन नाटकों मे हुआ है।

स्वातंत्र्योत्तर काल के ऐतिहासिक नाटक रंगमंच की दृष्ठि से लिखे हैं , जिनमे अभिनय के नये नये प्रयोग नाटककारों ने किये है। इस काल के नाटकों का उद्देश्य महत्त्वपूर्ण है, जो समाज तथा देश की नैतिकता बढानेवाला है।

ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास के चरित्रों और घटनाओं द्वारा वर्तमान समस्या पर विचार किया है।

डॉ. रामगोपाल शर्मा " दिनेश "

हिन्दी के सभी साहित्यिक विधाओं में सफलता प्राप्त किये डॉ. दिनेश बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति है। देश की हर प्रकार की बुराई को देखकर उसे दूर करने का प्रयास डॉ. दिनेश ने अपने साहित्य के द्वारा किया है। वे एक सफल कवि , तथा आलोचक हैं। इसके साथ ही नाटक, एकांकी, कहानी, उपन्यास, बालसाहित्य तथा पाठालोचन मे भी सिध्दहस्त रहे हैं। पत्रकार तथा भाषा-वैज्ञानिक के रूपमें आपका कार्य सराहनीय है।

पृथ्वीराज नाटक :

डॉ. दिनेश का पृथ्वीराज नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर आधारित है । १६ वी शती के मेवाड की राजनैतिक परिस्थिति इसका प्रमुख आधार है। महाराणा रायमल के शासनकाल की समस्याऐं और इसका समाधान-यह विचार नाटक का मूल स्रोत है।

नाट्य शिल्प की दृष्ठिसे " पृथ्वीराज " सफल नाट्य कृति है। भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य तत्वों का संमिश्र रूप इसमे व्यक्त हुआ है। ऐतिहासिक आधार पर लिखी, लेकिन आधुनिक युग की समस्यापर प्रकाश डालनेवाली यह कृति है। जो उद्देश्य नाटककारने व्यक्त किया है, वही इस नाटक की सार्थकता सिध्द करता है।

पात्रों के चरित्र चित्रण द्वारा लेखक ने आज के मानव को आदर्श का रास्ता दिखाया है। समाज तथा देश के संकट तभी दूर किये जा सकते हैं , जब शासन जनता को हर प्रकार की सुविधा दे और जनता शासन की संकट में सहायता करें।

दस्यु वृत्ति अर्थात आतंकवाद की समस्या का सहजता से स्पष्टीकरण लेखक ने किया है। संवादों की रचना अभिनय के अनुकुल है। नाटक के गीत शुध्द गीत की दृष्ठि से भी देखे जा सकते हैं।

"पृथ्वीराज" एक ऐतिहासिक नाटक है, जिसका आधार इतिहास की घटना तथा पात्र है। फिर भी वह भारत में फैली आतंकवाद की समस्या पर प्रकाश डालनेवाली कथा है। साथ ही इसमे आधुनिक युवकों की प्रवृत्ति का चित्रण भी मिलता है। रंगमंच की दृष्ठि से नाटककार ने उतनी सतर्कता नही बरती है, जितनी अभिनेय नाटक के लिये होनी चाहिए। कुशल निर्देशक के बिना इसका सफल प्रयोग रंगमंचपर प्रस्तुत नहीं हो सकता।

डॉ. रामगोपाल शर्मा "दिनेश" के "पृथ्वीराज" नाटक के समग्र अध्ययन के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि पृथ्वीराज नाटक ऐतिहासिक घटना तथा पात्रों के माध्यमसे आधुनिक समस्यापर भी प्रकाश डालते हुढ उसका समाधान करता है। एक आदर्श शासन व्यवस्था बनाने के लिए आदर्श गुणों से संपन्न राजा का होना आवश्यक है। देश का संकट, परम्परा की रक्षा से महत्वपुर्ण है। नयी पीढी अगर संस्कार संपन्न न होकर केवल विलासिता की ओर झुक गयी तो, शासन और समाज मे अशांति फैल सकती है। ऐसे समय परम्परा की उपेक्षा करके वर्तमान संकट को दूर करनेवाले वीरों की आवश्यकता है। पृथ्वीराज नाटक इसी का दर्पण है।

...